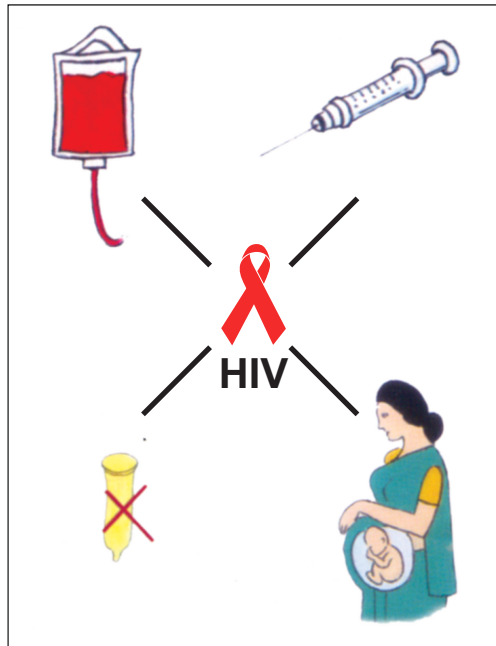




एचआईवी/एड्स

UPS  CS

संचरण

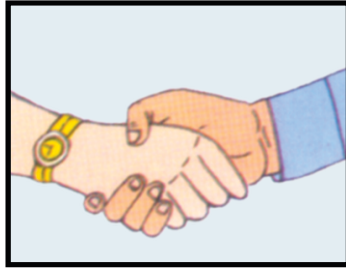


संचरण

एचआईवी निम्नलिखित माध्यमों से फैलता है :

1. एचआईवी संक्रमित खून से ।
2. एचआईवी संक्रमित सुइयों से ।
3. एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन सम्बन्ध से ।
4. एचआईवी संक्रमित माँ से शिशु में गर्भावस्था के दौरान, प्रसव के दौरान या स्तनपान कराने में ।

संचरण

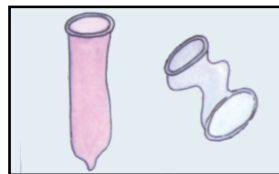
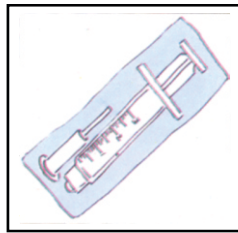


संचरण

एचआईवी निम्नलिखित करणों से नहीं फैलता है :—

- एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ खाना खाने से,
- एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ हाथ मिलाने से,
- एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के छींकने से,
- एचआईवी संक्रमित व्यक्ति के साथ बर्तन व कपड़े आदि बाँटने से।

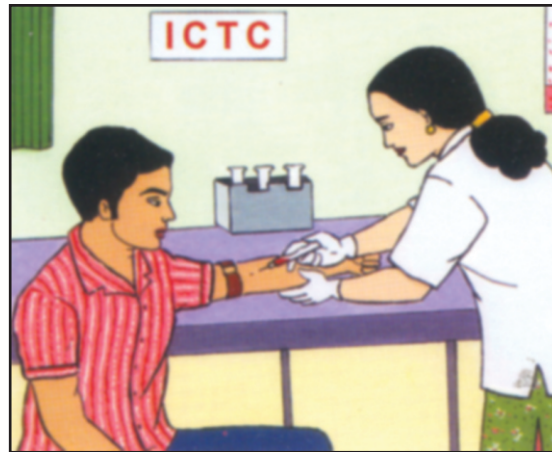
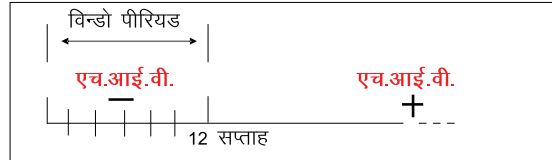
बचाव



बचाव

1. डिस्पोजेबल (जिन्हें एक बार प्रयोग करके फेंक देते हैं) या विसंक्रमित सुइयों का उपयोग करें।
2. प्रसव के दौरान उचित सावधानियाँ रखने से जिससे शिशु को एचआईवी संक्रमण से बचाया जा सके।
3. कंडोम का सही और लगातार उपयोग।

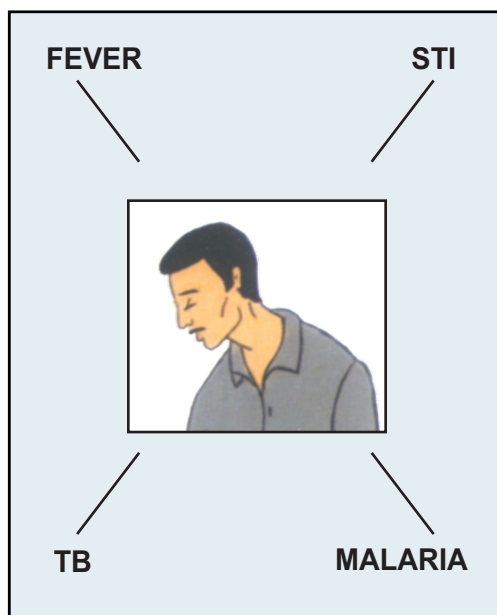
जाँच



जाँच

1. जब एचआईवी वॉयरस हमारे शरीर में प्रवेश करता है तब प्रतिक्रिया स्वरूप हमारा शरीर एन्टीबॉडीज़ (रोग प्रतिकारक) बनाता है।
2. एचआईवी जांच से पता चलता है कि एन्टीबॉडीज़ हमारे खून में हैं या नहीं।
3. आईसीटीसी में जांच गोपनीय वातावरण में की जाती है।
4. एन्टीबॉडीज़ बनने में लगभग 12 सप्ताह लगते हैं। इस समय को “विन्डो पीरियड” कहा जाता है। यदि पहली बार में जांच का परिणाम निगेटिव आए तो जांच दोबारा से की जा सकती हैं क्योंकि हो सकता है पहली बार जांच कराते समय व्यक्ति विन्डो पीरियड में हो।

જટિલતાएं



जटिलताएं

1. अवसरवादी संक्रमण

- जब एक व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो जाता है तब उसके शरीर की सफेद रक्त कणिकाओं (**WBC**) की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। यह कणिकाएं हमारे शरीर की रक्षा करती हैं।
- अवसरवादी संक्रमण शरीर की प्रतिरोधक क्षमता में कमी आने के कारण होते हैं।

જટિલતાएं

एच.आई.वी. $\xrightarrow{8 - 10 \text{ साल}}$ एड्स

जटिलताएं

एड्स

- जब शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है और शरीर संक्रमण से अपना बचाव नहीं कर पाता है तब उसे एड्स की अवस्था कहते हैं।
- समान्यतः संक्रमित होने के बाद एड्स होने में 8 से 10 साल लगते हैं। यह समय हर व्यक्ति के अनुसार अलग अलग हो सकता है।

ਏਆਰਟੀ



एआरटी

1. ए.आर.टी. “एन्टी रिट्रोवायरल थेरेपी” है।
2. यह उपचार एच.आई.वी. पॉज़िटिव व्यक्तियों में संक्रमण का नियंत्रण करने के लिए दिया जाता है।
3. यह दवाइयाँ एच.आई.वी. के इलाज के लिए नहीं है। यह केवल शरीर में वायरस को और ज़्यादा बढ़ने से रोकती हैं।
4. डाक्टर की सलाह पर ए.आर.टी. की दवाएँ मरीज़ द्वारा नियमित ली जानी चाहिए।
5. एक बार दवाएँ शुरू हो जाने के बाद व्यक्ति को जीवन भर यह दवाएँ लेनी पड़ती हैं।
6. सरकारी अस्पतालों में ए.आर.टी. की दवाएँ निःशुल्क मिलती है।

रेफरल



रेफरल

परियोजना एच.आई.वी संक्रमित व्यक्तियों को स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा दी जा रही सहयोग एवं देखभाल संबंधी सेवाओं को प्राप्त करने में मदद करती है।

अन्य जानकारी



उत्तर प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी

पिकप भवन, विभूति खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

फोन: 0522 2721871, 2720360, 2720361